पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 01.10.2025 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु **खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया,** घन्टाघर, दिल्ली– 110007, **आई. एफ. एस. कोड** SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. **9810117464** पर एस.एम.एस कर दें या **9868051444** पर googlepay कर दें।

–अनिल आर्य

वर्ष-42 अंक-09 आश्विन-2082 दयानन्दाब्द 201 01 अक्टूबर से 15 अक्टूबर 2025 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 01.10.2025, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के 47वें स्थापना दिवस की झलकियां

प्रथम चित्र में आचार्य विद्याप्रसाद मिश्र का अभिनंदन। द्वितीय चित्र में श्री आनन्द चौहान जी उद्बोधन देते हुए।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 47वें स्थापना दिवस पर आर्य समाज डिफेन्स कॉलानी में उपस्थित आर्यजन।

142वे महर्षि दयानन्द सरस्वती के बलिदान दिवस पर
केन्द्रीय आर्य युवक परिषद प्रस्तुत करता है भव्य संगीत संध्या

'एक शाम ऋषि दयानन्द के नाम'

रविवार 26 अक्टूबर 2025, 4.00 बजे से रात्री 8.00 बजे तक

स्थान- आर्य समाज पंजाबी बाग विस्तार नई दिल्ली

गायक कलाकार:– देव आर्य– नरेंद्र आर्य 'सुमन'– प्रवीन आर्य पिंकी

आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं। ऋषि लंगर रात्रि 8.00 बजे

निवेदक:

अनिल आर्य	महेन्द्र भाई	दुर्गेश आर्य व रामकुमार सिंह	धर्मपाल आर्य	देवेन्द्र भगत व प्रवीन आर्य	अरुण आर्य व सौरभ गुप्ता
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	राष्ट्रीय मंत्री	प्रबंधक

जहां होता है भरपूर काम और प्रभु का गुणगान आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के 47वें स्थापना दिवस की झलकियां

आर्य समाज अशोक विहार फेज 2 दिल्ली के उत्सव में समाजसेवी अशोक गर्ग का अभिनंदन करते अनिल आर्य।
द्वितीय चित्र मे डा. धर्मेंद्र शास्त्री को पुस्तक भेंट करते अनिल आर्य व महेन्द्र भाई।

प्रथम चित्र में प. आशानंद शास्त्री (पिता सुरेंद्र शास्त्री) का 125 जन्मोत्सव आर्य समाज अमर कॉलोनी नई दिल्ली में संपन्न हुआ। चित्र में आशा शास्त्री, सुरेंद्र शास्त्री, अनिल आर्य, रमेश गाड़ी, ओम प्रकाश छावड़ा, विद्याप्रसाद मिश्र आदि। द्वितीय चित्र में आर्य समाज कालका जी नई दिल्ली नई टीम संरक्षक रमेश गाड़ी, प्रधान आदर्श सलूजा मंत्री अनिल अरोड़ा अरुण कपूर दीपक सिब्बल आदि।

प्रथम चित्र में स्वतंत्र कुकरेजा प्रांतीय अध्यक्ष हरियाणा के कर्मठ कार्यकर्ताओं के साथ।
द्वितीय चित्र में जीन्द के जिला अध्यक्ष श्री कृष्ण दहिया अपनी टीम के साथ।

प्रथम चित्र में फरीदाबाद की टीम जितेंद्र सिंह आर्य के साथ। द्वितीय चित्र में आर्य केन्द्रीय सभा करनाल के प्रधान आनंदसिंह आर्य का अभिनंदन करते परिषद के अधिकारी।

प्रथम चित्र में आर्य समाजों के अधिकारियों के साथ आनंद चौहान जी। द्वितीय चित्र में प्रिन्सीपल अंजू मेहरोत्रा का अभिनंदन।

महाभारत के बाद विश्व में वेदों के प्रचार का श्रेय ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज को

—मनमोहन कुमार आर्य

पांच हजार वर्ष पूर्व हुए महाभारत युद्ध के बाद वेदों का सत्यस्वरूप विस्मृत हो गया था। वेदों के विलुप्त होने के कारण ही संसार में मिथ्या अन्धविश्वास, पक्षपात व दोषपूर्ण सामाजिक व्यवस्थायें फैली हैं। इससे विद्या व ज्ञान में न्यूनता तथा अविद्या व अज्ञानयुक्त मान्यताओं में वृद्धि हुई है। आश्चर्य होता है कि सत्य ज्ञान की खोज की प्रेरणा व उसके प्रचार का कार्य ऋषि दयानन्द के अतिरिक्त किसी मनुष्य को न सूझा न उसने किया। किया भी तो वह सत्यज्ञान वेदों तक नहीं पहुंच सका और उससे मानवता का जो भला हो सकता था वह न हो सका। लोग अविद्यायुक्त मत–मतान्तरों, अज्ञानयुक्त मान्यताओं व परम्पराओं का ही पोषण करते रहे। यह सब मत–मतान्तर ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज द्वारा ईश्वर से सृष्टि के आरम्भ में प्राप्त सत्य वेदज्ञान के प्रचार का विरोध करते रहे वा उसकी उपेक्षा करते रहे। वेद ईश्वरीय ज्ञान होने से सम्पूर्णतया सत्य है तथा सृष्टि के सभी रहस्यों से युक्त है। वेदों का ज्ञान ही मनुष्य की निजी व सामाजिक उन्नति का कारण है। इस तथ्य व सिद्धान्त की भी विश्वस्तर पर उपेक्षा ही देखने को मिलती है। वर्तमान समय में भी प्रचलित मत–मतान्तर अविद्या से युक्त वेदविरुद्ध विचारों, मान्यताओं व सिद्धान्तों तथा परम्पराओं को ही मानकर उनके अनुरूप व्यवहार कर रहे हैं। इसी कारण से संसार में अनेक प्रकार के संघर्ष व अशान्ति देखने को मिलती है। संसार में सब मनुष्यों का ईश्वर एक है तथा सब मनुष्य एक ईश्वर द्वारा उत्पन्न होने से उसी की सन्तानें हैं। सब मनुष्य परस्पर बहिन व भाई के सम्बन्ध से बन्धें हुए हैं। इस वसुधैव कुटुम्बकम् का व्यवहारिक स्वरूप विश्व में कहीं देखने को नहीं मिलता। ऐसी बातें वेद व वैदिक साहित्य में ही उपलब्ध हैं जिसका प्रचार करता हुआ कोई मनुष्य व संगठन दृष्टिगोचर नहीं होता। आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता यही है कि विश्व में वेदों का प्रचार संगठित व प्रभावशाली रूप से हो जिससे लोग अपने आत्मस्वरूप से परिचित होकर अपनी आत्मा की उन्नति कर दुःखों से मुक्त हो सकें। इसके साथ ही सब लोग परस्पर एक परिवार के समान सत्य व प्रेम से युक्त होकर परोपकार एव सहयोग का व्यवहार करें। ईश्वर के सत्यस्वरूप को जानकर उसे ही मानें व ईश्वर की उपासना से अपनी आत्मा के ज्ञान व सामर्थ्य को बढ़ाकर सुख व शान्ति का जीवन व्यतीत करें। वेद और आर्यसमाज सहित ईश्वर भी इसी कार्य को करने की प्रेरणा अपने सच्चे भक्तों व उपासकों को देते हैं। ईश्वर की भावना व प्रेरणा को जानना सब मनुष्यों का कर्तव्य है। इसे जानकर व व्यवहार में लाकर ही हम सभी समस्याओं का निदान कर सकते हैं।

महाभारत युद्ध के बाद वेदानुयायियों के आलस्य व प्रमाद के कारण वेदों का ज्ञान विलुप्त होकर विकृतियों को प्राप्त हुआ। देश में सच्चे धार्मिक संगठनों के अभाव व लोगों की सत्यधर्म की खोज में प्रवृत्ति न होने के कारण समाज मिथ्या विश्वासों से ग्रस्त रहा और उसमें सत्यज्ञान वेद के विरुद्ध आडम्बरों व पाखण्डों की वृद्धि ही देखने को मिलती है। सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान तथा सृष्टिकर्ता ईश्वर की मूर्ति की पूजा का विचार भी महात्मा बुद्ध के अनुयायियों ने प्रवृत्त किया। सत्य की कसौटी पर यदि मूर्तिपूजा को कसा जाये तो सर्वव्यापक व निराकार ईश्वर की मूर्ति बन ही नहीं सकती। यह एक कल्पना मात्र है। इसे आस्था भी कहा जाता है परन्तु आस्था यदि सत्य हो तभी उसके इच्छित परिणाम प्राप्त होते हैं अन्यथा शोक व दुःख के अतिरिक्त कुछ प्राप्त नहीं होता। मूर्तिपूजा में आस्था होने पर भी हमारे सोमनाथ, काशी, मथुरा, अयोध्या आदि हजारों मन्दिरों को तोड़ा गया और हम देखते रह गये। हम संघर्ष कर मृत्यु व गुलाम बनने के लिये विवश रहे परन्तु इन देवमूर्तियों ने हमारी रक्षा नहीं की। हमारे इस प्रकार के अनेक धार्मिक अन्धविश्वास ही देश व समाज के पतन के कारण सिद्ध हुए जिसमें देश का असंगठन व परतन्त्रता का कारण भी धार्मिक व सामाजिक मान्यताओं में वैदिक सत्य ज्ञान व वैदिक सत्य व्यवहारों का समावेश न होना था।

ऋषि दयानन्द ने अपनी बाल्यावस्था में ही अज्ञान व अन्धविश्वासों पर विश्वास न कर सत्य को जानने का प्रयत्न किया। मूर्तिपूजा की वास्तविकता को जानने के लिये उन्होंने अपने पिता व विद्वानों से प्रश्न किये थे परन्तु कोई उनकी सन्तुष्टि नहीं कर सका था। इसी कारण उन्होंने अपने पितृ गृह को त्याग कर ईश्वर के सत्यस्वरूप को जानने व प्राप्त करने का प्रयत्न किया था। इसी प्रयत्न में ही वह एक सच्चे समाधि सिद्ध योगी बनने के साथ वेद और वेदांगों के अपूर्व विद्वान बने। उन्होंने वेदों को प्राप्त कर उनके सत्यासत्य की परीक्षा कर अपने गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी की प्रेरणा के अनुसार तर्क व युक्तिसंगत सत्य वैदिक मान्यताओं का देश व समाज में प्रचार किया। वह सभी मत व पन्थों के विद्वानों को किसी भी धर्म व समाज हित से जुड़े विषय पर चर्चा व शास्त्रार्थ करने की चुनौती देते थे और अपने प्रवचनों में धर्म व आचरण विषयक सभी परम्पराओं की तर्कपूर्ण विवेचना कर सत्य का स्वरूप प्रस्तुत करते थे जिससे सामान्यजनों सहित मत–मतान्तरों के विद्वान भी उनके विचारों, मान्यताओं व तर्कों से सहमत होते थे।

ऋषि दयानन्द ने देश भर में घूम कर वैदिक मान्यताओं का मौखिक उपदेशों द्वारा प्रचार करने के साथ वेदों का सत्य स्वरूप समाज में उपस्थित किया। किसी पूर्ववर्ती मत व सम्प्रदाय के विद्वान में उनकी मान्यताओं को असत्य बताने व सिद्ध करने का सामर्थ्य नहीं था। काशी में 16 नवम्बर, 1869 को सनातन पण्डितों से मूर्तिपूजा पर शास्त्रार्थ में भी जड़ मूर्तिपूजा को वेदानुकूल तथा तर्क से सिद्ध नहीं किया जा सका। बड़ी संख्या में लोगों ने ऋषि दयानन्द के सत्संगों में सम्मिलित होकर अपनी मूर्तियों का नदियों में विसर्जन कर दिया था। जीवन के अन्तिम समय तक उनका दिग्विजय अभियान आगे बढ़ता रहा। बीस वर्षों के प्रचार कार्य में ऋषि दयानन्द ने अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये। उन्होंने आर्यसमाज जैसे वेद प्रचार आन्दोलन व संगठन की स्थापना की जो आज भी उनके वेद प्रचार मिशन को आगे बढ़ा रहा है। वैदिक सत्य मान्यताओं का प्रकाश करने सहित मत–मतान्तरों की मिथ्या मान्तयाओं की समीक्षा से युक्त संसार का एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ ''सत्यार्थप्रकाश'' भी उन्होंने संसार को दिया जिसे पढ़कर मनुष्य सत्य मत और मिथ्या मतों का निर्णय कर सकता है। ऋषि दयानन्द ने महाभारत के बाद पहली बार वेद के सत्य अर्थों को प्रस्तुत करने वाला वेदभाष्य प्रस्तुत किया। वह यजुर्वेद के सम्पूर्ण तथा ऋग्वेद के आधे से कुछ अधिक भाग का संस्कृत व हिन्दी में भाष्य प्रस्तुत कर सके जिससे आज भी देश विदेश में लोग लाभान्वित हो रहे हैं। ऋषि दयानन्द ने वेदों के प्रचार के लिये जो कार्य किया उसका ऐतिहासिक महत्व है। इससे वेदों के विद्वानों का उत्पन्न होना आरम्भ हुआ। स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा ऋषि दयानन्द के स्वप्नों के अनुरुप हरिद्वार के निकट कांगड़ी ग्राम में सन् 1902 में वैदिक ज्ञान परम्परा को पुनर्स्थापित करने के लिए गुरुकुल स्थापित किया था। आज देश में लगभग 250 गुरुकुल संचालित होते हैं जिसमें कन्याओं व बालकों के पृथक पृथक गुरुकुल हैं जहां वेदों की विदुषी देवियां व विद्वान उत्पन्न होते हैं। ऋषि दयानन्द ने ही स्त्रियों व शूद्रों को वेद पढ़ने व वैदिक विद्वान बनने का अधिकार दिया था। आज आर्यसमाज की विदुषी देवियां न केवल आर्यसमाजों अपितु पौराणिक बन्धुओं के घरों में भी यज्ञ की ब्रह्मा बनने सहित वेद पारायण वृहद यज्ञों की ब्रह्मा भी बनती हैं। यह ऋषि दयानन्द की अद्भुद् देन है। देश व समाज से सभी प्रकार के अज्ञान, पाखण्ड तथा अन्धविश्वासों को भी ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज ने दूर किया है। धर्म क्या है, इसे ऋषि दयानन्द ने ही परिभाषित किया है। धर्म श्रेष्ठ गुणों के धारण सहित सत्य का आचरण करने को कहते हैं। ईश्वर के सत्यस्वरूप को जानकर योग की उपासना विधि से उसका ध्यान करते हुए उसे प्राप्त करना ही मनुष्य का मुख्य कर्तव्य है। सभी वेद विहित कर्तव्य ही धर्म कहलाते हैं। देश व समाज के लिये समर्पित होकर कार्य करना भी धर्म है और इसके विपरीत व्यवहार करना ही अधर्म कहलाता है। वेद वा धर्म प्रचार के कार्यों सहित अन्धविश्वास दूर करने व समाज सुधार के अनेकानेक कार्य ऋषि दयानन्द व उनके अनुयायियों ने किये हैं। ऋषि दयानन्द के समय 1825–1883 में वेदों की एक प्रति प्राप्त करना असम्भव प्रायः था। आज उनकी कृपा व कार्यों से प्रत्येक आर्यसमाज के अनुयायी के घर में चार वेद, उनके हिन्दी व अंग्रेजी भाष्य सहित वेद विषयक अन्य महत्वपूर्ण ग्रन्थों सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्याभिविनय, संस्कारविधि, उपनिषद, दर्शन, मनुस्मृति आदि उपलब्ध हैं। आज सहस्रों लोग देश व समाज में विद्यमान हैं जिन्होंने कई कई बार वेद पारायण यज्ञ किये हैं तथा ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य सहित इतर भाग पर आर्य विद्वानों के वेद भाष्यों का अध्ययन किया हुआ है। वेदों की कोई बात अज्ञानता व पाखण्ड से युक्त नहीं है। वेदों का अध्ययन कर ही मनुष्य सच्चा आस्तिक बनता है तथा सभी व्यक्तिगत एवं सामाजिक बुराईयों से मुक्त होता है। वेदाध्ययन से मनुष्य के जीवन का सर्वांगीण विकास होता है तथा अविद्या व अंधविश्वास पूरी तरह से दूर हो जाते हैं। वेदाध्ययन एवं वेदाचरण से मनुष्य की उन्नति होने सहित सभी सुखों की प्राप्ति व दुःखों की निवृत्ति होती है। वेदानुयायी अग्निहोत्र यज्ञ आदि करके वायु व जल प्रदुषण को दूर करने में सहायक होकर प्रदुषण से होने वाले रोगों को दूर करने में भी सहायक होते हैं। मनुष्य जन्म पूर्वजन्मों के कर्मों का फल भोगने के लिये परमात्मा से मिलता है। वेदविहित कर्मों का करना ही धर्म होता है जिससे सांसारिक तथा पारमार्थिक उन्नति होती है। मनुष्य का वर्तमान जीवन तथा मृत्योत्तर परजन्म भी मनुष्यों की उत्तम कोटि व परिवेश में होता है। यह साधारण बात नहीं है। यही सबके लिये प्राप्तव्य व अभीष्ट है। अतः वेदाध्ययन तथा वेदविहित कर्मों का करना ही मनुष्य के लिए सबसे अधिक लाभकारी है। इसे प्राप्त करने के लिए सबको वैदिक जीवन ही व्यतीत करना चाहिये।

ऋषि दयानन्द ने वेदों का पुनरुद्धार तथा वेदों के सरल हिन्दी तथा संस्कृत भाषाओं में भाष्य कर, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका तथा संस्कारविधि आदि ग्रन्थ देकर, आर्यसमाज की स्थापना सहित देशहित के असंख्य कार्यों को करके भारत देश का सबसे अधिक उपकार किया है। इस कारण ऋषि दयानन्द भारत के सबसे अधिक पूजनीय व सम्मानीय सर्वोपरि महापुरुष हैं। देश के लोगों ने उनका सही मूल्यांकन नहीं किया गया है। राग द्वेष से युक्त मनुष्य उनका सही मूल्यांकन कर भी नहीं सकते। सत्य सत्य होता है, वह कभी बदलता नहीं है। उसे राग द्वेष से युक्त साधारण मनुष्यों के प्रमाण की आवश्यकता भी नहीं होती। इस आधार पर महर्षि दयानन्द न केवल भारत अपितु विश्व के सबसे महान् पुरुष हैं, ऐसा हम समझते हैं।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा 2020 से 741वां वेबिनार सम्पन्न

'युगों का काल और प्रवृतियों पर प्रभाव' विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

हर युग में कर्म की प्रधानता रही है –हरिओम शास्त्री

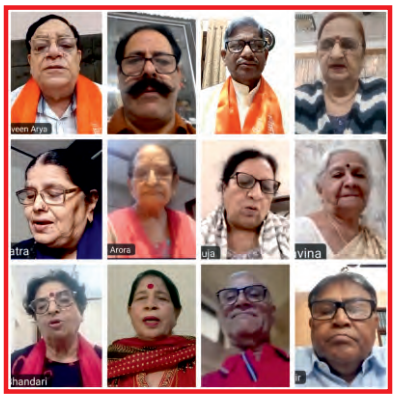

मंगलवार 16 सितंबर 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'युगों का काल और प्रवृतियों पर प्रभाव' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह करोना काल से 739वा वेबिनार था। मुख्य वक्ता आचार्य हरिओम शास्त्री ने कहा कि चाहे कोई भी युग हो हर युग मे कर्म की प्रधानता रहती है। हर युग मे पापी और पुण्यात्मा रहते आए हैं। सबसे छोटा युग कलियुग 432000 वर्षों का होता है। इसका दोगुना वर्षों का द्वापर और तीन गुना वर्षों तथा चार गुना कलियुग के वर्षों को मिलाकर सतयुग का काल होता है। 71 चतुर्युगियों को मिलाकर एक मन्वंतर होता है। इस तरह सारी सृष्टिकाल में कुल 14 मन्वन्तर होते हैं। अब यह सातवां वैवस्वत मन्वंतर की अभी 28 कलियुगी का 5126 वर्ष चल रहा है शेष अभी इसी कलियुग के 4,26,874 वर्ष बीतने बाकी हैं। इन सब युगों का जीवात्माओं के कर्मों और उनकी प्रतिक्रियाओं पर प्रभाव अवश्य पडता है। जैसे कि सतयुग मे देवता, गंधर्व, नाग, यक्ष, किन्नर, मानव, असुर, दैत्य और राक्षस रहते थे। फिर त्रेतायुग मे देवता, मानव (नागरिक और वानर) तथा राक्षस रहते रहे, द्वापर युग मे देवता, मानव (नागरिक और ग्रामीण) रहने लगे और मानव ही राक्षसों का काम करने लगा। और अब इस कलियुग मे केवल मानव ही रहते हैं। परंतु वे ही देवता, गंधर्व, असुर, दैत्य और राक्षसों का काम करते हैं। जिससे उनकी अलग अलग गतियां होने लगी हैं। कार्यक्रम के अध्यक्ष पूजा सलूजा व विमला आहूजा ने अपने विचार व्यक्त किए। परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका कौशल्या अरोड़ा, जनक अरोड़ा, कमला हंस, शोभा बत्रा, प्रवीना ठक्कर, सुधीर बंसल, वीरेंद्र आहूजा, कुसुम भण्डारी आदि के मधुर भजन हुए।

'श्राद्ध तर्पण का वैदिक स्वरूप विषय' पर गोष्ठी सम्पन्न

जीवित माता पिता की सेवा सच्चा श्राद्ध है–सुधीर बंसल
पितरों का सम्मान प्राचीन परंपरा है –ओम सपरा

मंगलवार 23 सितम्बर 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में श्राद्ध तर्पण का वैदिक स्वरूप विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल से 740वाँ वेबिनार था। मुख्य वक्ता सुधीर बंसल ने कहा कि श्राद्ध शब्द की व्युत्पत्ति श्रत् शब्द से अड्. प्रत्यय की युति होने पर बताया है जिसका सीधा सा अर्थ है आस्तिक बुद्धि और इसका वर्णन छान्दोग्य उपनिषद की कण्डिकाओं में भी सर्वत्र दिया गया है। उन्होंने स्पष्टतः समाज में फैली इस दूषित परम्परा का खण्डन करते हुए ये ज्ञात करवाने की कोशिश की कि अपने जीवित माता–पिता या वृद्ध बुजुर्गों की तो उनकी इच्छा आवश्यकताएं पूरी करनी नहीं होतीं, उनकी भावनाओं का सम्मान नहीं किया जाता तो यही मानना चाहिए कि तथाकथित श्राद्ध के नाम पर घोर पाखण्ड और तमाशा किया जाता है वर्षों से हर वर्ष इस पितृपक्ष के 15 दिनों में और वर्षों पूर्व जो मृत्यु प्राप्त कर चिता की भेंट चढ़ चुके पूर्वज, उनको उनके इच्छित पदार्थ और व्यञ्जनों को बना–पका कर स्वार्थी ब्राह्मणों की उदर पूर्ति करवाकर इस मंशा से कि ये हमारे परलोक में विराजे पितरों को पहुँच जायेंगे इन लोभियों के पेट से निकलकर या छत पर चढ़कर कौओं को आवाज देकर बुलाना और खीर, हलवा, पूड़ी खिलाना, ये सब कृत्य करके मनुष्य अपने आप को तो धोखा दे ही रहा है, अपनी आत्मा के साथ भी खिलवाड़ करता है। उन्होंने अपनी स्वरचित आशु–कविता के माध्यम से समाज में फैले इस रोग पर चोट करते हुए बताया कि–पापा–माता तो जा चुके, ऊपर दोनों साथ। आया अश्विन मास तो, बने खीर, घी और भात॥ सुनाकर श्रोताओं को भावविभोर कर दिया। मुख्य अतिथि ओम सपरा (पूर्व मेट्रो पोलटन मजिस्ट्रेट) ने कहा कि भारतीय संस्कृति में पितरों का सम्मान और स्मरण अत्यंत प्राचीन परंपरा है। संस्कृत शब्द श्राद्ध का अर्थ है– श्रद्धा और विश्वासपूर्वक किया गया कर्म। यह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि अपने पूर्वजों के प्रति आभार, कृतज्ञता और श्रद्धा का भाव है। वैदिक दृष्टि से श्राद्ध पितृयज्ञ है, जो पंचमहायज्ञों में से एक है। मनुष्य पर तीन ऋण बताए गए हैं– देवऋण, ऋषिऋण और पितृऋण। पितृऋण से मुक्त होने का साधन ही श्राद्ध है। कार्यक्रम अध्यक्ष ओम प्रकाश यजुर्वेदी ने अपने विचार व्यक्त किए, परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम चित्र में मूलचन्द अस्पताल के निदेशक डॉ. सुनील रहेजा के अभिनंदन का दृश्य। द्वितीय चित्र में ठाकुर विक्रम सिंह का अभिनंदन करते अनिल आर्य, यशोवीर आर्य, प्रो. नरेंद्र आहूजा विवेक, महेन्द्र भाई व वीरेंद्र आहूजा।

श्री नागरिक रामलीला कमिटी रानी बाग दिल्ली में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए व द्वितीय चित्र स्वामी आर्यवेश जी व आर्य मुसाफिर गंगा शरण आर्य, अनिल आर्य को सम्मान पत्र भेंट करते हुए।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 **मो.**: 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970